आदत संबंधी विकारों के कारण :

इन विकारों का स्पष्ट कारण अज्ञात है।

अनुवांशिक प्रवृत्ति और मनो–नामार्थिक कारण इन विकारों से संबंधित पाए गए हैं।

जो बच्चे लगातार नाखून चबाते हैं वे अत्यधिक अधीरता एवं हीन–भावना से ग्रसित हो सकते हैं।

आदत संबंधी विकारों में क्या करें अथवा क्या न करें :

बच्चे के हाथों को व्यस्त रखें। जब भी आप बच्चे को नाखून चबाते देखें उसे कुछ और करने के लिए जिसे जैसे लिखने, चित्रकारी इत्यादि करने के लिए प्रोत्साहित करें।

ध्यान दें कि बच्चा किन परिस्थितियों में नाखून चबाता है अथवा अनुकूल मूड में आता है, जिससे बच्चे को उस परिस्थिति से जुड़ने/उठने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके तथा बच्चे को इस आदत से छुटकारा पाने में सहयोग दिया जा सके।

ऐसे मामलों में बच्चों को इन आदतों के दुष्प्रभाव जैसे दांतों की बनावट को कुरूपता, बार–बार गले एवं नाखून के नीचे संक्रमण होना आदि के बारे में शिक्षित करना लाभकर रहता है।

अक्सर बच्चों को दस्ताने पहनना या हाथों पर पट्टी बांधने का सुझाव दिया जाता है, परन्तु ये उपाय ज्यादा लाभकर नहीं हैं।

होम्योपैथी आदतन संबंधी रोगों में किस प्रकार लाभदायक हैं ?

इन विकारों में होम्योपैथिक दवाओं के साथ–साथ व्यवहार संबंधी परामर्श देने से अधिकतर बच्चों में सफलता मिलती है।

इन विकारों में प्रयोग होने वाली होम्योपैथिक औषधियाँ भिन्न हैं, परन्तु इनके प्रयोग से पहले किसी योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक से परामर्श अवश्य करें।

लक्षण	औषधियाँ
अंगूठा चूसना	*कॅल्केरिया कॉर्ब्ज़ोनिकम्, इपिकाकुआना, नेट्रम म्यूरेटिकम्, साइलीसिया ।*
नाखून चबाना	*एरम ट्रिफाइलम् आर्सेनिक एल्बम् हिना मार्टिना, वेरेट्रम एल्बम ।*

पीछे दिए गए निर्देशों का पालन करें

होम्योपैथिक उपचार में सामान्य हिदायतें :

1. आदतन संबंधी विकारों के उपचार के लिए औषधियों का प्रयोग किसी योग्य चिकित्सक के परामर्श से करना चाहिए।
2. औषधि का सेवन मुँह साफ करके करें और बेहतर होगा कि खाली पेट लें।
3. औषधियों को तेज गन्ध वाली वस्तुओं जैसे कपूर तथा मैंगाल इत्यादि से दूर रखें।
4. औषधियों को ठंडे एवं शुष्क स्थान पर रखें और धूप एवं गर्मी से दूर रखें।
5. औषधियों को बच्चों की पहुँच से दूर रखें।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, आयुष्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन स्वायत्ती निकाय)
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथिक अनुसंधान भवन,
61–65, सोमदत्ता हैंड, डी–ब्लॉक के सामने, जसोला, नई दिल्ली–110044
फोन: 91–11–26821162, 91–11–26820523 फैक्स: 91–11–26821060
ईमेल : ccrh@del3.vsnl.net.in वेबसाइट : www.ccrhindia.org

होम्योपैथी द्वारा
मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य रक्षा हेतु
राष्ट्रीय अभियान

बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याओं का होम्योपैथी द्वारा इलाज

आयुर्वेद, योग एवं अनुसंधान निकाय, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी चिकित्सा विभाग (आयुष्)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन स्वायत्ती निकाय)

कुछ बच्चे अपने अस्वाभाविक आचरण के कारण अपने माता पिता तथा शिक्षकों के लिए समस्या का कारण बनते हैं। इनमें निम्नलिखित आचरण सम्मिलित हैं :

- प्रतिकूल, आक्रमक और विपरत्नकारी व्यवहार ।
- शरारतपूर्ण एवं विरोधी व्यवहार ।
- बच्चों में नियम पालन और सामान्य व्यवहार के पालन में कठिनाई होना ।
- अनुपयुक्त एवं अधिक क्रियाएँ ।

व्यवहार संबंधी समस्याओं को आचरण रोग भी कहते हैं जिसके लक्षण इस प्रकार हैं :

- झूठ बोलना या चोरी करना ।
- पुरातन वस्तुओं और अवसर अोध करना ।
- अक्सर आवेश करना तथा वाद–विवाद (बहस) करना ।
- चीजों को तोड़ना, नुकसान करना ।
- बड़ों के प्रति प्रतिकूल व्यवहार रखना ।
- अपने आप को चोट पहुँचाना ।
- जान–बूझकर दूसरों को तथा जानवरों को हानि पहुँचाना ।
- बच्चों में कम आयु में काम वासना की भावना का उत्पन्न होना ।

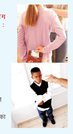

कारण

अनेक भौतिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों से असामान्य व्यवहार पैदा होता है।

- अनुवांशिकता
- मस्तिष्क को क्षति
- बच्चों का शोषण
- स्थूल में असफलता
- दुःख पूर्ण घटनाएँ
- माँ का बच्चे को छोटी उम्र में अलगीकार करना
- माता पिता का बच्चे को अपने से दूर रखना
- माता या पिता का मानसिक रोग से ग्रस्त होना
- परिवार में झगड़े की घटनाएं होना

व्यवहार संबंधी समस्याओं से ग्रस्त बच्चे अक्सर निम्नलिखित कठिनाइयों को भी अनुभव करते हैं :

- शैक्षिक कठिनाइयाँ
- अपनी आयु अथवा बड़ों के साथ कम आत्मीयता
- अनाथ आश्रम, समूह या दत्तक के साथ रहने में कठिनाई
- अधिक चोट लगना, स्थूल से निष्क्रियित होना और नियम पालन करने में कठिनाई होना ।

यदि शिशु अवस्था में सही उपचार न किया जाए तो यह बच्चे बड़े होकर :

- रिश्तों को निभाने और नौकरी में कठिनाइयाँ अनुभव करते हैं ।
- वे अक्सर कानून तोड़ते हैं तथा अपराधिक कार्य करने लगते हैं ।

व्यवहारिक समस्याओं में क्या करें और क्या न करें :

1. माता–पिता की सक्रिय सहभागिता अत्यंत आवश्यक है ।
2. बच्चे के साथ उदार तथा आत्मीय संबंध रखें । बच्चे का निरंतर मार्गदर्शन करें और अधिक ध्यान दें ।
3. बच्चे के उचित और दृढ़तापूर्ण व्यवहार को सराहें और पुरस्कार दें ।
4. प्रयास करें कि बच्चों को सजा न दें और यदि जरूरी हो तो सजा के तौर पर उसको घर के काम में मदद करवाएं, मिठाई आदि बन्द कर दें (परन्तु खाना नहीं), टीवीविज़न पर रोक लगाएं इत्यादि ।
5. माता–पिता स्थूल के मनोवैज्ञानिक/मनोचिकित्सक की मदद भी ले सकते हैं ।

उपचार :

होम्योपैथिक औषधियाँ व्यवहार संबंधी समस्याओं को नियंत्रित करने में कारगर हैं यदि वह आदत के दुरुपचार (शारीरिक और मनोवैज्ञानिक आघात) और परिवेश संबंधी कारणों के फलस्वरूप उत्पन्न हों ।

उपचार प्रारंभ करने से पहले, बच्चे को प्रतिकूल वातावरण से अलग रखना जरूरी है ।

माता–पिता, होम्योपैथिक चिकित्सक और मनोचिकित्सक के सामूहिक प्रयास से बच्चे के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हो सकता है।

मनोचिकित्सक बच्चे को व्यक्तिगत मनोचिकित्सा और माता पिता को बाल प्रबंधन में शिक्षा देता है ।

इस प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त बच्चे होम्योपैथिक चिकित्सा से लाभान्वित हो सकते हैं ।

निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियाँ बच्चों के व्यवहार संबंधी लक्षणों को प्रदर्शित करती हैं। किन्तु योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक के परामर्श पर ही दवा का सेवन करें ।

लक्षण	औषधि का नाम
चोरी करना	*एक्टिनिडियम*
झूठ बोलना	*ओपियम*
अत्यधिक गुस्सा, क्रोध और चिड़चिड़ापन	*कैमोमिला*
निर्देशों और प्रतिरोधपूर्ण	*नाइट्रिक एसिड*
तोड़ फोड़ करना	*स्टैफिसेग्रिया*
विद्रोह करना और अवमानना	*टैरेन्टुला हिस्पानिका*
खुद को हानि पहुँचाना	*ऑरम मैटेलिकम*
अत्यधिक में यौन क्रियाशीलता	*बुफो रना*

पीछे दिए गए निर्देशों का पालन करें

आदतन सम्बन्धी व्यवहार दोष

1. अंगूठा चूसना

छोटे बच्चों में अंगूठा चूसना एक सामान्य व्यवहार माना जाता है। लेकिन बड़े बच्चों और युवाओं में यह गलत व्यवहार होता है।

कुछ बच्चों को अंगूठा या उंगलियां चूसने से सुख्ता का अभास होता है।

कुछ बच्चों में अंगूठा चूसना भूख, थकावट, नींद, दांत निकलने या डर से सूचक होता है।

अत्यधिक अंगूठा चूसने के कारण दाँतो की संरचना या बनावट को नुकसान पहुंच सकता है।

इसके कारण जबड़े की हड्डी भी प्रभावित हो सकती है क्योंकि बच्चों में ये कोमल होती है और आसानी से मुड़ सकती है।

2. नाखून चबाना

नाखून चबाना अधीरता संबंधी आदतों में सबसे आम है जिसमें नाक में उंगली डालना, बाल घुमाना या खींचना, दांत किटकिटाना और त्वचा नोचना शामिल है।

स्कूल जाने वाली उम्र के लगभग 50 प्रतिशत बच्चे इससे प्रभावित हैं।

नाखून काटना अथवा चबाना यदि दैनिक क्रिया–कलापों में या सामाजिक संबंधों में बाधा उत्पन्न करे तब यह एक विकार समझा जाता है।

नाखून चबाने से उंगलियों के सिरे लाल हो जाते हैं, उनमें दर्द हो सकता है तथा उनमें रक्तस्राव भी हो सकता है।

नाखून चबाने से नाखून के नीचे और मुंह में संक्रमण होने के आसार बढ़ जाते हैं।